SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

सोशल मीडिया के माध्यम से नागरिक पत्रकारिता का विस्तार

सुरेश प्रताप सिंह "दीक्षित", (Ph.D.), पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,
आकाश यादव, शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,
डी.सी.एस. खांडेलवाल महाविद्यालय, मऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors

सुरेश प्रताप सिंह "दीक्षित", (Ph.D.),
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,
आकाश यादव, शोधार्थी,
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,
डी.सी.एस. खांडेलवाल महाविद्यालय,
मऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 17/06/2022
Revised on : -----
Accepted on : 24/06/2022
Plagiarism : 06% on 18/06/2022

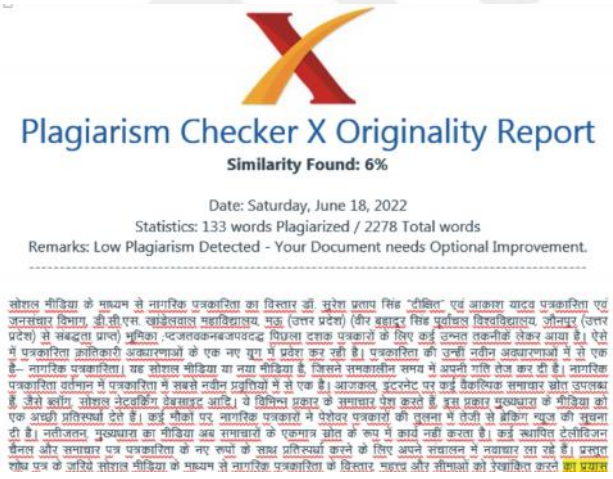

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 6%

Date: Saturday, June 18, 2022
Statistics: 133 words Plagiarized / 2278 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

सोशल मीडिया के माध्यम से नागरिक पत्रकारिता का विस्तार डॉ. सुरेश प्रताप सिंह "दीक्षित" एवं आकाश यादव पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, डी.सी.एस. खांडेलवाल महाविद्यालय, मऊ (उत्तर प्रदेश) (वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उत्तर प्रदेश) से सबद्धता प्राप्त) भूमिका :दजतवकनबजपवदद्ध पिछला दशक पत्रकारों के लिए कई उन्नत तकनीकें लेकर आया है। ऐसे में पत्रकारिता क्रांतिकारी अवधारणाओं के एक नए युग में प्रवेश कर रही है। पत्रकारिता की उन्हीं नवीन अवधारणाओं में से एक है– नागरिक पत्रकारिता। यह सोशल मीडिया या नया मीडिया है, जिसने समकालीन समय में अपनी गति तेज कर दी है। नागरिक पत्रकारिता वर्तमान में पत्रकारिता में सबसे नवीन प्रवृत्तियों में से एक है। आजकल, इंटरनेट पर कई वैकल्पिक समाचार स्रोत उपलब्ध हैं, जैसे ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट आदि। ये विभिन्न प्रकार के समाचार पेश करते हैं, इस प्रकार मुख्यधारा के मीडिया को एक अच्छी प्रतिस्पर्धा देते हैं। कई मौकों पर, नागरिक पत्रकारों ने पेशेवर पत्रकारों की तुलना में तेजी से ब्रेकिंग न्यूज की सूचना दी है। नतीजतन, मुख्यधारा का मीडिया अब समाचारों के एकमात्र स्रोत के रूप में कार्य नहीं करता है। कई स्थापित टेलीविजन चैनल और समाचार पत्र पत्रकारिता के नए रूपों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए अपने संचालन में नवाचार ला रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र के जरिये सोशल मीडिया के माध्यम से नागरिक पत्रकारिता के विस्तार, महत्त्व और सीमाओं को रेखांकित करने का प्रयास

शोध सार

पिछला दशक पत्रकारों के लिए कई उन्नत तकनीकें लेकर आया है। ऐसे में पत्रकारिता क्रांतिकारी अवधारणाओं के एक नए युग में प्रवेश कर रही है। पत्रकारिता की उन्हीं नवीन अवधारणाओं में से एक है– नागरिक पत्रकारिता। यह सोशल मीडिया या नया मीडिया है, जिसने समकालीन समय में अपनी गति तेज कर दी है। नागरिक पत्रकारिता वर्तमान में पत्रकारिता में सबसे नवीन प्रवृत्तियों में से एक है। आजकल, इंटरनेट पर कई वैकल्पिक समाचार स्रोत उपलब्ध हैं, जैसे ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट आदि। ये विभिन्न प्रकार के समाचार पेश करते हैं, इस प्रकार मुख्यधारा के मीडिया को एक अच्छी प्रतिस्पर्धा देते हैं। कई मौकों पर, नागरिक पत्रकारों ने पेशेवर पत्रकारों की तुलना में तेजी से ब्रेकिंग न्यूज की सूचना दी है। नतीजतन, मुख्यधारा का मीडिया अब समाचारों के एकमात्र स्रोत के रूप में कार्य नहीं करता है। कई स्थापित टेलीविजन चैनल और समाचार पत्र पत्रकारिता के नए रूपों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए अपने संचालन में नवाचार ला रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र के जरिये सोशल मीडिया के माध्यम से नागरिक पत्रकारिता के विस्तार, महत्त्व और सीमाओं को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द

नागरिक पत्रकारिता, सोशल मीडिया, ऑनलाइन पत्रकारिता, जागरूकता, प्रसार.

प्रस्तावना

आज के समय में आमजन के लिए ऐसे कई मंच उपलब्ध हैं, जिनका उपयोग वे सामग्री अपलोड करने के लिए कर सकते हैं। ट्विटर एक प्रमुख मंच है और मुख्यधारा के मीडिया पर आने से पहले ट्विटर पर आने

वाली खबरों की सूची चौंका देने वाली है। प्रसिद्ध उदाहरणों में व्हिटनी ह्यूस्टन की मृत्यु शामिल है, जिसे किसी भी मुख्यधारा के प्रेस द्वारा उठाए जाने से एक घंटे पहले ट्विटर पर रिपोर्ट किया गया था। ओसामा बिन लादेन की छापेमारी और मौत, 2011 की सबसे बड़ी खबरों में से एक थी। बराक ओबामा द्वारा दुनिया के सामने इसकी घोषणा करने से एक दिन पहले एक स्थानीय आईटी सलाहकार द्वारा अनजाने में किए गए ट्वीट्स में यह रिपोर्ट सामने आई थी। इसके अतिरिक्त, अप्रैल 2013 में बोस्टन मैराथन बम विस्फोटों के दोषी पुरुषों के लिए लाइव पीछा करने वाले समाचार चौनलों ने जो हो रहा था उसे स्थापित करने के लिए क्षेत्र में रहने वाले नागरिकों के अपडेट पर बहुत अधिक भरोसा किया। यह वीडियो, चित्र, ट्वीट, स्काइप कॉल, ब्लॉग और कई अन्य माध्यमों के माध्यम से कैप्चर किया गया था। उपयोगकर्ता द्वारा निर्मित सामग्री के जरिये आज नागरिक पत्रकारिता ज्यादा समृद्ध और सशक्त होता जा रहा है। डिजिटल कंटेंट, लाइव स्ट्रीमिंग, व्यापक पहुंच जैसी सुविधाओं के साथ सोशल मीडिया ने नागरिक पत्रकारिता को एक नया आयाम दिया है। विभिन्न दृष्टिकोणों से विभिन्न घटनाओं के समाचार आज के समय में नागरिक पत्रकारों द्वारा लोगों के सामने लाया जा रहा है। सोशल मीडिया के विस्तार की वजह से वर्तमान में नागरिक पत्रकार सामान्य लोग नहीं रहे। इस प्रकार सोशल मीडिया मंच आज पत्रकारिता के नया अध्याय का लेखन कर रहा है।

शोध का उद्देश्य

1. नागरिक पत्रकारिता के क्षेत्र में आ रहे बदलावों के बारे में गहराई से जानकारी हासिल करना।
2. सोशल मीडिया के स्वरूप के अनुसार नागरिक पत्रकारिता के विस्तार का अध्ययन करना।
3. जमीनी स्तर पर नागरिक पत्रकारिता की वस्तुस्थिति के संबंध में जानना।

शोध की परिकल्पना

परिकल्पना किसी भी जांच का प्रारंभिक बिंदु है, जो शोध प्रश्नों को भविष्यवाणियों में बदल देता है। किसी भी शोध कार्य की परिकल्पना एक धारणा है, जो कुछ आंकड़ों और प्राप्त संज्ञानों के आधार पर बनाई जाती है। प्रस्तुत शोध कार्य की परिकल्पनाएं इस प्रकार हैः

1. नागरिक पत्रकारिता को वर्तमान में कई बदलावों से गुजरना पड़ रहा है।
2. नागरिक पत्रकारिता का कार्य सोशल मीडिया के माध्यम से सहजता से किया जा सकता है।
3. नागरिक पत्रकारिता के क्षेत्र में आ रहे बदलावों के पीछे सोशल मीडिया एक प्रमुख आधार प्रदान कर रहा है।

शोध प्रविधि

प्रकृति के हिसाब से पत्रकारिता एवं जनसंचार शोध गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों ही प्रकार के शोध से सीधे तौर पर जुड़ा हुआ है। जहां एक ओर पत्रकारिता एवं जनसंचार शोध के लिए विभिन्न सांख्यिकीय पद्धतियों का प्रयोग कर तथ्यों का पता लगाया जाता है, वहीं पत्रकारिता एवं जनसंचार क्षेत्र में विद्यमान किसी प्रकृति को लेकर लोगों के विचारों के बारे में भी जानने का प्रयास किया जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है। साक्षात्कार हेतु एक प्रश्नावली के माध्यम से सौ पत्रकारों एवं संवाददाताओं से शोध विषय से संबंधित 15 प्रश्न पूछे गए। प्रश्नों को खुली प्रकृति का (ओपेन एंडेड) रखा गया था ताकि उत्तरदाता अपनी बातों को विस्तार से व विषय केंद्रित होकर बता पाएं। साक्षात्कार प्रश्नावली को उत्तरदाताओं को ईमेल के जरिये डिजिटल स्वरूप में भेजा गया, जिससे शोध आंकड़ों के संकलन और प्रस्तुतीकरण में आसानी हो व डाटा संकलन के पश्चात् उनके विश्लेषण सहजता से किया जा सके। केवल साक्षात्कार विधि से संचार शोध पूर्णतः वस्तुनिष्ठ नहीं माना जा सकता। अतः वस्तुनिष्ठता के लिए साक्षात्कार के साथ–साथ अवलोकन का भी प्रयोग किया गया। इसके अंतर्गत कई चुनिंदा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से नागरिक पत्रकारों द्वारा जो कंटेंट प्रसारित किये जा रहे हैं, उनका गहराई से अवलोकन कर शोध आंकड़ों का संकलन किया गया है।

शोध कार्य का महत्त्व

1. प्रस्तुत शोध कार्य के माध्यम से नागरिक पत्रकारिता के कार्यों एवं पहुंच के संबंध में सटीक जानकारी हासिल हो पाएगी।
2. पारदर्शिता के साथ नागरिक पत्रकारिता अपना भूमिका अदा कर रहा है या नहीं, इस संबंध में विस्तृत जानकारी मिल पाएगी।
3. सोशल मीडिया के माध्यम से नागरिक पत्रकारों के पहुंच और प्रभाव का अध्ययन हो पाएगा।

शोध की सीमाएं

नागरिक पत्रकारिता का क्षेत्र आज बहुत ही व्यापक हो गया है, ऐसे में नागरिक पत्रकारिता के हर पहलू को लेकर शोध करना जटिल कार्य है। देश में कई सारे मीडिया संगठन और नागरिक पत्रकार लगातार विभिन्न खबरों का प्रसार और प्रकाशन विभिन्न सोशल मीडिया मंच के जरिये करते रहते हैं। ऐसे में सारे सोशल मीडिया मंच का अवलोकन करना संभव नहीं था। अतः कुछ सोशल साइट्स का युक्तियुक्त आधार पर चयन कर अवलोकन किया गया है साथ ही सौ पत्रकारों व संवाददाताओं जो नागरिक पत्रकारिता से किसी न किसी रूप में जुड़े हैं, उन्हीं को साक्षात्कार प्रश्नावली इमेल द्वारा भेजकर शोध कार्य के लिए प्राथमिक आंकड़ों का संकलन किया गया है। इसी वजह से शोध निष्कर्ष का सामान्यीकरण राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय फलक नहीं कर पाना भी प्रस्तुत शोध की सीमा है।

साहित्य पुनरावलोकन

कुमार, मुकेश (2018) सोशल मीडिया की लोकप्रियता ने नागरिक पत्रकारिता को उड़ान का अवसर दिया है। हालांकि नागरिक पत्रकारिता पर अनेक तरह के आरोप लगाए जाते रहे हैं, किंतु अपनी सकारात्मक पहल से इसके उन सवालो का जवाब भी दिया है। तथ्य, स्पष्टता, संतुलन, वस्तुगत, अश्लीलता, व्यक्तिगत हमले, भ्रामक, अफवाह आदि सन्दर्भों में नागरिक पत्रकारिता शिकायतों के केंद्र में रहा है। नागरिक पत्रकारिता के क्षेत्र में संपादक का न होना इसके लिए जिम्मेदार माना जाता है। इस सबके बावजूद प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से शोधार्थी का मानना है कि नागरिक पत्रकारिता का ज्यों–ज्यों विकास होगा, प्रचार–प्रसार होगा सभी शिकायतें खत्म होती चली जाएंगी। उसकी उड़ान और ऊँची होती जाएगी और वह अपने मकसद में कामयाब हो पाएगा।

कुमार रवीश (2020) भारतीय मीडिया में एक विस्फोटक स्थिति देखी जा रही है। इसमें बड़ी मात्रा में टेलीविजन समाचार चौनल दिन–ब–दिन बढ़ते जा रहे हैं। इंटरनेट समाचार पोर्टल भी बड़ी संख्या में हिट दर्ज कर रहे हैं। पत्रकारिता अनुभवी और नवोदित दोनों तरह के पत्रकारों के लिए स्थान प्रदान करती है। नवोदित पत्रकारों में आज के समय में नागरिक पत्रकारों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। ऐसा सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों के आगमन की वजह से माना जा सकता है। शोध लेखक का मानना है कि इस स्थिति में एक संतुलन की आवश्यकता है अन्यथा यह पत्रकारिता के मानदंडों को बदलकर रख सकती है।

शोध आंकड़ों का विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन के लिए युक्तियुक्त प्रविधि के अनुसार उत्तरदाताओं का चयन किया गया। इसके तहत उन उत्तरदाताओं का चयन किया गया जो किसी न किसी नागरिक पत्रकारिता गतिविधि से जुड़े हुए थे। कोई ऐसा उत्तरदाता नहीं है, जो किसी भी नागरिक पत्रकारिता गतिविधि से नहीं जुड़े थे अर्थात् किसी भी नागरिक पत्रकारिता गतिविधि से न जुड़ने वालों का प्रतिशत शून्य है। अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाता 18 वर्ष से 45 वर्ष के बीच की आयु के हैं। अध्ययन में शामिल किये गये उत्तरदाताओं में 37 प्रतिशत उत्तरदाता महिला तथा 63 प्रतिशत उत्तरदाता पुरूष हैं। साथ ही कुल सौ उत्तरदाताओं का चयन शहरी व ग्रामीण दोनों क्षेत्रों से किया गया। उपरोक्त उत्तरदाताओं से साक्षात्कार के उपरांत जो बातें निकलकर सामने आईं साथ ही सोशल मीडिया साइट्स के अवलोकन के उपरांत जिन तथ्यों की जानकारी हासिल हुई उनका प्रस्तुतीकरण निम्नलिखित हैः

- देश में अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय स्तर पर कई सारे मीडिया मंचों का संचालन किया जा रहा है। इसमें

से कुछ सोशल साइट्स को अवलोकन के लिए चुना गया है। इन साइटों के अवलोकन के पश्चात् यह जानने को मिला कि आपतौर पर नागरिक पत्रकार कई बार एक से अधिक सोशल साइट का इस्तेमाल अपने द्वारा संकलित या निर्मित किसी सूचना को व्यापक स्तर पर या कहें कि मास लेवल तक पहुंचाने के लिए करते हैं।

- उत्तरदाताओं से पूछे गए सवालों के जरिये यह ज्ञात हुआ कि नागरिक पत्रकारिता संगठित रूप से संचालित नहीं होती इसी वजह से नागरिक पत्रकारों द्वारा तैयार किये गये कंटेंट को कई बार उस स्तर की स्वीकार्यता नहीं मिल पाती जो मुख्यधारा की मीडिया को मिलती है।
- शोध कार्य में शामिल विभिन्न साक्षात्कारदाताओं से जब यह जानने का प्रयास किया गया कि कौन से सोशल मीडिया का इस्तेमाल ज्यादातर नागरिक पत्रकार करते हैं तो अधिकांश लोगों का यह मानना था कि यूट्यूब और फेसबुक का इस्तेमाल वे ज्यादातर करते हैं।
- नागरिक पत्रकारों से साक्षात्कार के माध्यम यह जानने को मिला कि सोशल मीडिया के आगमन के पश्चात् नागरिक पत्रकारिता को एक नया आयाम हासिल हुआ। सोशल मीडिया की पहुंच और फैलाव से पूर्व नागरिक पत्रकारिता मुख्यधारा की मीडिया के द्वारा ही संचालित हो पाता था। उसमें भी बहुत कम ऐसे मौके उपलब्ध हो पाते थे जब नागरिक पत्रकारों को अपनी बातों को आमजन तक पहुंचाने का समय मिल पाता था।
- सोशल मीडिया के क्षेत्र में आज कई सारे मंचों के आगमन के पश्चात् नागरिक पत्रकारों को अपनी बातों को व्यापकता के साथ या कहें कि खुल कर रखने की आजादी मिल पाई है। इससे पूर्व नागरिक पत्रकारों के रिपोर्टों को संपादन और छनन की प्रक्रिया से होकर गुजरना पड़ता था जिससे कि नागरिक पत्रकार अपनी बातों की अभिव्यक्ति मुखर होकर नहीं कर पाते थे।
- शोध साक्षात्कार में शामिल अधिकांश नागरिक पत्रकारों का मानना था कि सोशल मीडिया के फैलाव की वजह से नागरिक पत्रकारिता का क्षेत्र अपनी एक अलग पहचान स्थापित कर पाया है। भले ही यह पहचान मुख्यधारा की मीडिया से बिल्कुल अलग है, लेकिन नागरिक पत्रकारों को अपनी बातों को रखने का एक बेहतर माध्यम है।
- अधिकांश नागरिक पत्रकारों ने शोध प्रश्न के उत्तर में यह स्वीकार किया कि सोशल मीडिया मंचों की व्यापकता एवं विविधता के कारण ही आज नागरिक पत्रकारिता को पहले से अधिक बल मिला है।
- शोध कार्य के लिए साक्षात्कार विधि से आंकड़ों के संकलन में मुख्य रूप से यह तथ्य उजागर हुआ कि नागरिक पत्रकारिता के सशक्तीकरण में सोशल मीडिया अपनी विशेष भूमिका निभा रहा है।
- अवलोकन के माध्यम से आमतौर पर ऐसा पाया गया कि मुख्यधारा की मीडिया में नागरिक पत्रकारिता के लिए जगह तो होती है, मगर नागरिक पत्रकारों को मुख्यधारा की मीडिया में कम स्थान या महत्त्व मिल पाता है। ऐसे में नागरिक पत्रकार मुख्यधारा की मीडिया के माध्यम से अपनी पूरी बात आमजन तक नहीं पहुंचा पाते।
- शोध के दौरान अवलोकन के माध्यम से यह जानने को मिला कि कई मुद्दों की जानकारी नागरिक पत्रकारों के पास मुख्यधारा की मीडिया से पहले ही आ जाती है। ऐसे में मुख्यधारा की मीडिया को भी कई बार नागरिक पत्रकारों द्वारा संग्रहित जानकारियों पर निर्भर होना पड़ता है। यही नागरिक पत्रकारिता की सबसे बड़ी खासियत है।

इस प्रकार से शोध कार्य के लिए प्रयुक्त शोध विधियों, जिसमें साक्षात्कार एवं अवलोकन को शामिल किया गया था, के माध्यम से कई सारी जानकारियां हासिल हुईं। शोध के माध्यम से मूल रूप से प्राप्त प्राथमिक आंकड़ों के आधार पर जो तथ्य जानने को मिले उनके विश्लेषण के पश्चात् निष्कर्ष निकाला गया।

निष्कर्ष एवं सुझाव

उपरोक्त विषय पर शोध कार्य के परिणामस्वरूप कई नए तथ्य निकलकर सामने आए। बदलती पत्रकारीय तकनीक सोशल साइट्स की विविधता की वजह से नागरिक पत्रकारिता के क्षेत्र में भी कई सारे बदलाव देखने को मिल रहे हैं। नागरिक पत्रकारिता के माध्यम से कई सारे मुद्दों और सूचनाओं का प्रस्तुतीकरण लगातार किया जा रहा है। मुख्यधारा की मीडिया के साथ–साथ सोशल मीडिया ने नागरिक पत्रकारिता को एक नया संबल प्रदान किया है। इस प्रकार मुख्यधारा की मीडिया और सोशल साइट्स या वैकल्पिक मीडिया के मिश्रित उपयोग के द्वारा नागरिक पत्रकारिता का दायरा बढ़ता जा रहा है। इससे जहां एक ओर मौलिक सूचना अद्यतन रूप में निकलकर सामने आ रही हैं, वहीं दूसरी ओर आमजन को भी विभिन्न सूचनाएं गहराई व विविधता के साथ जानने की मिल रही हैं। ऐसे में उपरोक्त शोध कार्य के निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि नागरिक पत्रकारिता के सशक्तीकरण में सोशल मीडिया साइट्स अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

नागरिक पत्रकारों को जहां एक तरफ विभिन्न सोशल साइट्स ने अपनी बातों को खुलकर रखने की स्वतंत्रता प्रदान की है वहीं दूसरी तरफ उनकी जिम्मेदारियां भी पहले के मुकाबले आज बढ़ी हुई प्रतीत हो रही है। साइबर कानूनों में बदलाव और सख्ती की वजह से नागरिक पत्रकारों के कानूनी दायरे में आने का खतरा भी बना रहता है। यही कारण है कि नागरिक पत्रकारों को सोशल साइट्स के माध्यम से मिली अभिव्यक्ति के नये मंचों का इस्तेमाल सोच समझकर, जिम्मेदारी पूर्वक ढ़ंग से करना जरूरी है।

संदर्भ सूची

1. कुमार, रवीश. (2020), *बोलना ही है: लोकतंत्र, संस्कृति और राष्ट्र के बारे में,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन.
2. Seungahn Nah and Deborah S. Chung. (2020). *Understanding Citizen Journalism as Civic Participation.* New Delhi: Routledge.
3. Rajan, Nalini (Editor). (2007). *21st Century Journalism in India*. New Delhi: SAGE Publications India.
4. Kaur, Jaspal and Singh, Sandhu. (2012). *Legal Recognition of Citizen Journalism on the Internet: Development of Rights and Responsibilities.* Publisher Aberystwyth University.
5. Berger, AA. (2011). *Media and Communication Research Methods: An Introduction to Qualitative and Quantitative Approaches*. London: Sage Publication Inc.
6. Cram, I. (2015). *Citizen Journalists: Newer Media, Republican Moments and the Constitution.* U.K.: Edward Elgar Publishing Limited.
7. http://www.jetir.org/papers/JETIR1902642.pdf
8. https://hi.theastrologypage.com/citizen-journalism

****